Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-15, Issue-2, September-2021
www.researchguru.net

मोहनदास नैमिशराय का आज बाज़ार बंद है उपन्यास में पीड़ित नारी का चित्रण

धवलकुमार रमणभाई चौधरी

पीएच.डी., शोधार्थी हिंदी विभाग सरदार पटेल युनिवर्सिटी वल्लभ विद्यानगर, आणंद मो. नं. 7575806450 E-mail : dchaudhari473@gmail.com

मोहनदास नैमिशराय एक सशक्त दलित साहित्यकार के रूप में माना जाता है। उनका जन्म उत्तरप्रदेश के मेरठ शहर में एक दलित बस्ती में 5 सितम्बर, 1949 ई., में हुआ था। एक गरीब परिवरा में जन्मे मोहनदास नैमिशराय जाति से चमार थे। मोहनदास के परिवार का नैमिशराय यह उपनाम कैसे पड़ा इसके संदर्भ में भी एक दंतकथा प्रचलित है। कहते है कि उत्तर भारत में दलित के आँगन में नीम के पेड़ होते है। मोहनदास के पुश्तैनी घर के आँगन में भी नीम का पेड़ था जो इनके लिए पूजनीय था। सराय में नीम का पेड़ होने से या नीम के सहवास में रहने के कारण ही इनका उपनाम नैमिशराय पड़ गया था।

मोहनदास नैमिशराय को अपने साहित्य लेखन की मूल प्रेरणा रसवंती को मानते हैं। प्रेमिका रसवंती का विवाह होने पर जब वह मायके में आती है तो लेखक के दिल की बेचैनी बढ़ने लगती है। अपनी इस अवस्था के संबंध में वे लिखते है कि "उसकी मौजूदगी एवं गैर-मौजुदगी दोनों ही मुझे परेशान करती थी। मेरे भीतर कोई बवंडर उठता था, जिसे झेलते-झेलते मेरी स्थिति ज्वार भाटा में फँसी किसी की तरह बन जाती थी। मेरे भीतर लिखने का प्रवाह वहीं से उमडना शुरू हुआ था।"[1]

नैमिशराय जी को बचपन से ही उपन्यास लिखने की आदत थी। उपन्यास लिखने की प्रवृत्ति और भी तेजी के साथ बढ़ी। वैसे भी मेरठ उपन्यास लिखनेवालों एवं छापनेवालों का केंद्र था। उन दिनों मैं नये-नये शब्दों का आविष्कार भी करता था। कुछ शब्द कहानियों तथा उपन्यासों से लेता था। हमारे बीच संवाद न था। संवादहिनता की स्थिति में भी किसी-न-किसी रूप में संवाद की प्रक्रिया बनी हुई थी।

मोहनदास नैमिशराय का आज बाजार बंद है उपन्यास का प्रकाशन वाणी प्रकाशन नई दिल्ली से 2004 ई., में हुआ था। यह उपन्यास बेहद बहुत चर्चित रहा है। इस उपन्यास में वेश्याओं के जीवन संघर्ष एवं उनकी समस्याओं पर आधारित है। यह उपन्यास राष्ट्र की बेटियों को

समर्पित करते हुए उन्हें जागृत करने का प्रयत्न किया गया है। आज आधुनिक काल में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक जीवन में बहुत बदलाव आया है। इसी कारण भारतीय हिंदू समाज ने वेश्यावृत्ति को जायज माना है एवं छेदकर उन बेटियों में जागृति लाने का प्रयत्न किया गया है।

वेश्या शब्द बोलने में जितना छोटा लगता है वास्तविकता में उसका अर्थ बहुत कड़वा एवं घिनौना है। क्योंकि वेश्या स्त्री के स बर्बर स्वरूप को उद्घाटित करता है जिकता जिम्मेवार वह स्वयं कभी नहीं रहता। वेश्याओं के इन्हीं कष्टपूर्ण जीवन को लेकर हिंदी साहित्य के इतिहास में अनेक उपन्यास लिखे गये है. आज बाजार बंध है, का नाम उनमें विशेष रूप से उल्लेखनीय माना गया है। क्योंकि यह उपन्यास वेश्या जीवन का दस्तावेज है। लेखक ने उपन्यास के द्वारा वेश्याओं के जीवन, संघर्ष पीड़ा, अपमान एवं उनकी समस्याओं पर विस्तार से चित्रण किया है। उपन्यास के आरंभ से ही लेखक ने वेश्या जीवन पर लिखने का विचार व्यक्त किया है। जैसे कि लेखक के शब्दों में उल्लेखित किया है कि "शहर मे अखबार वालों से पहले इस खबर को फैलाने का अभियान छेडा था रिक्शा और तांगे वालों से कोई भी सवारी मिलते वे उन्हें ये खबर बतलाएँ बिना नहीं रहते हैं। चटपटी बातें सुनकर सवारियाँ अपने-अपने दांत दिखा देती है। बदले में वाहन चालक भी पीछे न रहते। सब्जियों से लेकर औरतों के भाव के बारें में पूछताछ होने लगती है। सच कहा जाए तो सवारी ढोने वाले वे हरकारे, डाकिये एवं खबरनवीस सभी इस तरह की खबरों को अपने-अपने ढंग से गढ़ते थे।"[2]

"शहर के मुख्य बाजार से बिल्कुल नाक की सीध में चलें तो वेश्याओं का यह बाजार तीन किलोमीटर से अधिक दूर न था। बीच में पड़ता था लड़कियों का स्कूल, अनाथालय, नारी निकेतन, मंदिर और मस्जिद। कहा जाता है क् रंड़ियों के इसी बाजार को द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजो ने फिर से बसाया था। उस बाजार के बसाने के पिछे कुछ उद्देश्य थे। वैसे ही बंबई के फार्ल्क रोड कलकत्त के चौरंगी बाजार और दिल्ली के जी.बी.रोड के भी उद्देश्य यही रहे हैं।"[3]

आद बाजार बंद है में नारी पात्र पार्वती की जली कटी बातें सुन शराबी बुदबुदाया था, "घर में घर में स्साली बीबी सुनाती है और यहां रंडी, आखिर आदमी कहां जाएं, शराबी का अंतिम वाक्य सुनकर पार्वती भड़क उठी थी, जहन्नुम में जा स्साले,"[4] उसी प्रकार नारी का अत्यत्य दयनीय चित्रण व्यक्त किया गया है। समाज की गंदगी साफ करना ही उनकी नियति थी। समाज को उनसे यहीं उम्मीद थी। वैश्याएं ही है उनकी काबिल। समाज को उनसे यही उम्मीद थी। युग बदले पर

उनके धंधे का स्वभाव न बदला। राम राज्य से कलयुग तक वैसी ही की वैसा रहीं।

उपन्यास की नायिका शबनम बाई बिस्तर से उठने के बाद नियम से पहले गमलों में उगाए पौधों को पानी देती। बाद में गिलास भर पानी स्वयं पीती। उन्हीं गमलों में तुलसी का चौरा भी था। महज एक पौधा, पर आस्था और विश्वास का प्रतीक भी थी। कहने का तात्पर्य यह है की उसी समाज में नारी की दयनीय स्थिति का लेखक ने चित्रण किया है। उपन्यास में गाँव भर की औरतें शगुन-अपशगुन पूछने जाती, उसके हाथों से ताबीज बंधवाती। पुजारी मौका देख कर लगाँव की औरतों के अंगो को छेड़ बैठता, औरतें थोड़ा भी सहन करती तो उनके उरोजो को सहलाने लगतदा था। गले में जनेऊ, माथे पर बड़ा टीका, सिर पर बीचो बीच गांठ देकर खड़ी की गयी चुटिया। इन तीनों को रखने का अधिकार दलित समाज को नहीं था।

समाज में देवदासी को रखने का अधिकार नहीं था। इनके संदर्भ में लेखक ने उल्लेखित किया है कि "तू देवदासी है और देवदासी को शिकायत करने का अधिकार नहीं होता। वरना देवता कुपित हो जाएगें। स्वयं यमल्ला देवी तुझसे नाराज हो जाएगी। तेरा सत्यानाश हो जाएगा। तू कहीं की भी नहीं रहेगी।"[5] लेखक ने उल्लेखित किया है कि हमें पहले देवदासी बनाया, फिर वेश्या। एक ही जाति की कुआरी लड़कियों को देवदासी क्यों बनाया जाता है। उसने कई बार मंदिर में जाकर यह सवाल पूछा था। एक व्यक्ति को सजा या उसके परिवार को या फिर उसकी जाति को या उसकी जाति की एक पीढ़ी को दलित जातियों की सभी जातियों को यह सजा भोगनी पड़ती है। लेखक ने बताया है कि क्यां रंडी माँ नहीं हो सकती ? रंडी भी तो औरत है एवं प्रत्येक औरत माँ होती है। रफ्ता-रफ्ता ग्राहकों की दसत्क भी होने लगी थी। हसीना एवं मुमताज बाहर छज्जे पर थी. जबकि पार्वती अपनी कोछरी में डायरी में उसने लिखा था। एक फरिश्ते की दस्तक एवं वेश्यावृत्ती से मुक्ति का फैसला बहुत दिन के बाद कौई आदमी मिला। मुझे उम्मीद है वह हमारी तकदीरों को अवश्य ही बदलेगा।

उपन्यास के पात्र पार्वती एक सशक्त पात्र है पार्वती बिल्कुल सच किया तुमने आज दिन में जो फैसला किया, मुझे अच्छा लगा। तुम्हारे बीतर मुक्ति की चेतना जग चुकी है। सुमीत ने पार्वती को गुलामी की नींद से जगाया पार्वती के भीतर के पंख फड़फड़ाने लगे थे। शबनम बाई अपने अंतिम दिनों में अच्छी माँ बनना चाहती थीं। हालांकि उन वेश्याओं से उसके पेट की जाया नहीं थी। उन्हें बंजर बना दी गई थी। बंजर जमीन भला कहां फले-फूलेगी। अत: वेश्या जीवन में समय बीत जाने से माँ का सुख नहीं प्राप्त कर सकती थी।

अत: लेखक ने बताया है कि औरतें पेदाइसी गुलाम नहीं होतीं। गुलाम उसे आदमी बनाता है। रस्म-रिवाज बनाते हैं। वे परंपराएँ बनाती हैं, जिन्हें मैंने कभी का छोड़ दिया है। तुझे पता नहीं तेरे पास आदमी क्यों आता है औरत के पास थोड़ा ठहर कर स्वयं ही ने जवाब देते हैं। उसके पास जिस्म होता है। तेरे पास जिस्म भी है और गर्मी भी। जिस दिन तू ठण्डी हो जाएगी, वह छोड़ कर चला जाएगा।

अत: निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि नैमिशराय जी के उपन्यासों की नारी वेश्यावृत्ति की समस्याओं को समकालीनता के संदर्भ में जिस लहजे में प्रस्तुत किया है वह काबिले तारीफ है। उनकी जगह अगर कोई और लेखक होता तो शायत ही वेश्यावृत्ति का ऐसा चित्रण हमें देखने के मिलता उनकी कोशिश बहुत उच्च कोटि की मालूम होती है जहाँ उन्होंने जीवन के अनुभव को उपन्यास के माध्यम से साझा किया है। जो सर्वथा सार्थक सिद्ध है। मुझे यह बात बेचैन करती रही है कि ये सब परिवार की माँ, बहिन एवं बेटियाँ हैं। आखिर कोठेवालियाँ कैसे बन गयी। समय-समय पर वेस्यावृत्ति को कर्मवाद एवं भाग्यवाद के सनातनी विचार से जोड़ा जाता रहा है। शरीफ घरानों की लड़कियों का जीना मुश्किल हो जाएगा। हालांकि समाज दूषित बहुत पहले से ही होता रहा है। उसी प्रकार नैमिशराय जी के उपन्यास की नारियों की स्थिति मानसिक एवं शारीरिक यातनाओं के साथ देहविक्रय के व्यवसाय में धकेल दिया जाता है। उसका मार्मिक एवं वास्तविक निरूपण सचोट ढंग से किया गया है। अनाथ निराश्रित लड़कियों को देहविक्रय की गंदगी में धकेल दिया जाता है। ऐसे अनाथालयों के नाम पर पनप रह वेश्यालयों का पर्दाफाश किया गया है। उपन्यास में लेखक ने सदियों से चली आ रही देवदासी प्रथा द्वारा शोषण की शिकार हो रही स्त्रियों की दयनीयता का वास्तविक चित्र उजागर किया गया है। नैमिशराय जी ने आज बाजार बंद है उपन्यास में नारी की इन सभी समस्याओं पर प्रकाश डाला है।

संदर्भ ग्रंथ

1. www.Shodganga. In
2. नैमिशराय मोहनदास, आज बाजार बंद है, पृ. 12
3. वहीं, पृ. 54
4. वही, पृ. 138
5. वहीं, पृ. 98